

---

Shri Shankaracharya Bhujangaprayata Ashtakam

श्रीशङ्कराचार्यभुजङ्गप्रयाताष्टकम्

Document Information

---

Text title : Shankaracharya Bhujangaprayata Ashtakam

File name : shaMkarAchAryabhujangaprayAtAShTakam.itx

Category : deities\_misc, gurudev, shankarAchArya, aShTaka

Location : doc\_deities\_misc

Transliterated by : Rahul Gamara

Proofread by : Rahul Gamara

Latest update : May 14, 2023

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

May 14, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीशङ्कराचार्यभुजङ्गप्रयाताष्टकम्



सपत्नीक-विप्रेन्द्र-भक्तिप्रकाशं  
नवादित्य-सङ्काशमन्तर्विकाशम् ।  
धराभारसंहारकं देवदेवं  
भजे शङ्करं देशिकेन्द्रं वरेण्यम् ॥ १ ॥

श्रुतिप्रोक्त-सद्धर्मरक्षावतारं  
महामोह-सन्दोह-सन्तापहारम् ।  
जगद्वन्द्यपादं सदाद्वैतवादं  
भजे शङ्करं देशिकेन्द्रं वरेण्यम् ॥ २ ॥

त्रितापाग्निदग्धाकुलान् जीवसङ्घान्  
कृपासारधाराभि-संप्लावयन्तम् ।  
क्षमा-मण्डनं मण्डनाचार्य-पूज्यं  
भजे शङ्करं देशिकेन्द्रं वरेण्यम् ॥ ३ ॥

जगन्मङ्गलं ज्ञान-विज्ञानतृप्तं  
गुणातीतमद्वैततत्त्व-प्रदीप्तम् ।  
प्रसन्नं प्रकृष्टं शरण्यं गरिष्ठं  
भजे शङ्करं देशिकेन्द्रं वरेण्यम् ॥ ४ ॥

महावाक्य-पीयूष-दाने प्रदक्षं  
विनेयाभिसन्तापनाशे सुदक्षम् ।  
प्रसन्नाम्बुजाक्षं सदा मे समक्षं  
भजे शङ्करं देशिकेन्द्रं वरेण्यम् ॥ ५ ॥

प्रपन्नार्त्त-हृद्धान्तनाशे प्रदान्तं  
प्रसन्नाभिसौम्यातिसौम्यं प्रशान्तम् ।  
चिदानन्द-सन्मात्रमूर्तिं सुकान्तं  
भजे शङ्करं देशिकेन्द्रं वरेण्यम् ॥ ६ ॥

श्रुतेर्भाष्य-भासा समुद्रासयन्तं  
विपक्षान् स्वपक्षान् सदा कारयन्तम् ।  
स्वशिष्यान् सुयोग्यान् मुदा वोचयन्तं  
भजे शङ्करं देशिकेन्द्रं वरेण्यम् ॥ ७ ॥

चतुर्वेदरूपान् स्वरूपान् स्वशिष्यान्  
सुरेशाब्जपादादिसंज्ञान् वरिष्ठान् ।  
चतुर्दिक्षु संस्थापयन्तं शरण्यं  
भजे शङ्करं देशिकेन्द्रं वरेण्यम् ॥ ८ ॥

श्रीशङ्कराष्टकं पुण्यं हृषीकेश-प्रकल्पितम् ।  
राजतां देशिकेन्द्रस्य कोमले चरणाम्बुजे ॥ ९ ॥

इति श्रीजगन्नाथाश्रम-पूज्यपाद-शिष्य श्रीहृषीकेशाश्रम  
विरचितं श्रीशङ्कराचार्य-भुजङ्गप्रयाताष्टकं सम्पूर्णम् ।

Encoded and proofread by Rahul Gamara

---

—  
*Shri Shankaracharya Bhujangaprayata Ashtakam*  
pdf was typeset on May 14, 2023

—  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

